विषय अनुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

पुरोवाक्

पहला अध्याय 1-52

समकालीन हिन्दी कविता और चन्द्रकान्त देवताले की कवि-व्यक्तित्व

1.1 समकालीन शब्द : एक विश्लेषण
1.2 समकालीनता साहित्य के व्यापक परिप्रेक्ष्य में
1.3 समकालीन हिन्दी कविता
1.4 समकालीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ
    1.4.1 दलित चेतना
    1.4.2 स्त्री अस्मिता
    1.4.3 राजनीतिक विसंगति
    1.4.4 सांस्कृतिक विद्रूपता
    1.4.5 पारिस्थितिक सजगता
1.5 चन्द्रकान्त देवताले : कवि व्यक्तित्व
    1.5.1 जीवनवृत्त
    1.5.2 कार्य क्षेत्र
    1.5.3 सम्मान एवं सम्बद्धता
1.6 रचनात्मक व्यक्तित्व
    1.6.1 रचना-यात्रा
    1.6.2 काव्य संग्रहों का संक्षिप्त परिचय
    1.6.3 रचनात्मक व्यक्तित्व
        1.6.3.1 कवि-कर्म : कविता ही का जुबानी
1.7 निष्कर्ष

दूसरा अध्याय 53-100

भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक संकट

2.1 संस्कृति : एक वैचारिक भूमिका
2.2 संस्कृति : अर्थ व्युत्पत्ति और परिभाषायें

2.3 संस्कृति के सहयोगी तत्व
2.4 भारतीय संस्कृति : विशेषतायें
2.5 भारतीय संस्कृति : परिवर्तन के विविध आयाम
2.5.1 प्रारंभकालीन संस्कृति
2.5.2 सुल्तानकालीन संस्कृति
2.5.3 मुगलकालीन संस्कृति
2.5.4 अंग्रेज़ी संस्कृति
2.6 भारतीय संस्कृति संकट के दैर में
2.7 भूमंडलीकरण
2.8 भूमंडलीकरण के औजार : उदारीकरण और निजीकरण
2.9 भूमंडलीकरण के विविध पहलू
2.9.1 नव-उपनिवेशीकरण
2.9.1.1 बहुराष्ट्रीय निगम
2.9.1.2 विदेशी सहायता
2.9.1.3 अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संस्थायें
2.9.2 सांस्कृतिक साम्राज्यवाद
2.9.2.1 मीडिया
2.9.2.2 भाषा
2.9.2.3 शिक्षा
2.10 सांप्रदायिकता के विध्वंसात्मक परिवेश
2.10.1 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
2.10.2 आतंकवाद
2.11 वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास का असर
2.12 निष्कर्ष

तीसरा अध्याय 101-148

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में सांस्कृतिक संकट के विभिन्न आयाम

3.1 भूमण्डलीकरण के श्याम पक्ष
3.1.1 उदारीकरण और निजीकरण की समस्यायें
3.1.2 सांस्कृतिक हमला
3.1.3 भाषिक गुलामी का चित्रण
3.2 विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास का असर
3.3 पश्चिमिकीकरण की समस्या
3.4 शहरीकरण की विपत्ती
3.4.1 नगर में बदलता गाँव

3.4.2 नष्ट होती ग्रामीण संस्कृति
3.4.3 प्रदूषित पृथ्वी
3.5 साम्राज्यत्व का शिकंजा
3.6 सामाजिक भिन्नता : एक आन्तरिक तनाव
3.6.1 संकीर्ण जातीयता
3.6.2 सांप्रदायिक बैर और आतंक
3.6.3 अल्पसंख्यकों का शोषण
निष्कर्ष

चौथा अध्याय 149-223

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं में बदलती सांस्कृतिक अस्मिता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य और प्रतिरोध

4.1 भूमंडलीय बाज़ार के उपभोगवादी संस्कृति
4.2 क्रय-विक्रय की बाजारु संस्कृति
4.3 मीडिया संस्कृति की चुनौती
4.4 मानवीयता पर कुठराघात
4.5 यान्त्रिक संस्कृति का प्रभाव
4.6 न्याय व्यवस्था का असमर्थता के पर्दाफाश
4.7 छलनामय राजनीतिक संस्कृति
4.8 अवमूल्यन की अपसंस्कृति
4.8.1 पारिवारिक मूल्य क्षरण
4.8.2 धार्मिक मूल्य क्षरण
4.8.3 सामाजिक मूल्य क्षरण
4.9 प्रतिरोध की संस्कृति
4.9.1 धार्मिक कट्टरता का विरोध
4.9.2 साम्राज्यत्व का विरोध
4.9.3 बाज़ारोन्मुख मानसिकता का प्रतिरोध
4.9.4 शोषण का प्रतिरोध
4.9.4.1 स्त्री शोषण
4.9.4.2 वर्ग शोषण
4.9.5 अवमूल्यन का विरोध
4.9.6 विनाशकारी विकास का प्रतिरोध
4.9.7 अमानवीय सामाजिक व्यवस्था का विरोध
4.9.8 पारिस्तितिक शोषण का विरोध

पाँचवाँ अध्याय 224-271

चन्द्रकान्त देवताले की कविताओं की भाषिक संरचना

5.1 भाषा और संरचना

5.2 सांस्कृतिक संकट की अभिव्यक्ति में भाषा

5.3 शैलीगत विशेषताएँ

5.3.1 गद्यात्मकता

5.3.2 आत्मकथात्मक ढंग

5.3.4 संवाद का रूप

5.3.5 संबोधन व आह्वान

5.3.6 रिपोर्ट शैली

5.3.7 व्यंग्यात्मकता

5.3.8 आंचलिकता

5.3.9 पूर्व : दीप्ति पद्धति

5.4 बिम्ब योजना

5.5 प्रतीक विधान

5.6 फन्तासी का प्रयोग

5.7 मिथक का प्रयोग

5.8 शब्दों का प्रयोग

5.8.1 मीडिया संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.2 बाज़ारू संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.3 लोक संस्कृति से जुडे शब्द प्रयोग

5.8.4 अन्य शब्दों का प्रयोग

5.8.4.1 तत्सम

5.8.4.2 अरबी

5.8.4.3 अंग्रेज़ी

5.8.4.4 मराठी

5.8.4.5 उरदू

5.8.4.6 हिन्दी

निष्कर्ष

उपसंहार 272-283

संदर्भ ग्रन्थ सूची 284-301